उदासीन संप्रदाय ग्रंथो के आईने में

श्री गणेशाय नमः

ॐ नमो ब्रह्मणे

ॐ श्री चन्द्राय नमः

उदासीन सम्प्रदाय भारत वर्ष का प्राचीनतम श्रौत सम्प्रदाय है। सृष्टि के आरंभ में ब्रह्मा ने सात्विक संकल्प से सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार नामक चार मानस पुत्रों को उत्पन्न किए और सृष्टि-निर्माण की आज्ञा दी। किन्तु चारो कुमारों ने पिता का आदेश स्वीकार नहीं किए।मोक्ष धर्मा और वासुदेव परायण होने के कारण वे उर्ध्वरेता उदासीन मुनि कहलाए।

"सनन्दनायो येच पूर्व सृष्टास्तु वेधसा।

न ते लोकेष्व सज्जन्त हयुदासीनाः प्रजासु ते ॥"

पदम पुराण सृष्टि खण्ड 3.169

ब्रह्मा की प्रार्थना पर भगवान नारायण 'हंस' रूप में अवतरित होकर सनत कुमारों को ब्रह्म विद्या का उपदेश दिया। इसलिए भगवान नारायण प्रथम उपदेष्टा माने जाते हैं। श्री नारायण से प्राप्त उपदेश को कुमारों ने नारद को दिया और चतुर्थाश्रम धर्म की दीक्षा प्रदान की। इसलिए सनक आदि कुमार उदासीन सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक कहलाते हैं। उदासीन शब्द में दो पद हैं- उद् और आसीन।

उद् पद ब्रह्म का वाचक है। उदासीन शब्द का अर्थ ब्रह्मसंस्थ होता है, जो चतुर्थाश्रमी का वाचक है -

" ब्रह्मसंस्थोऽमृतत्व मे ति"

छान्दोग्योपनिषत् 2:23 वैवस्वत मन्वन्तर में जटा व श्मश्रुधारी गौतम, भरद्वाज

विश्वमित्र, कश्यप जमदग्नि, वसिष्ठ और अत्रि भी उदासीन मत में सम्मिलित हो गये। वे कन्धे पर जनेऊ (यज्ञोपवीत),एक हाथ में माला व दूसरे में कमण्डलु धारण करते थे। भगवत् प्राप्ति उनके जीवन का अंतिम लक्ष्य था। वे सपत्नीक होने के कारण उदासीन ऋषि कहलाये—

"उदासीनाः सोपवीता कमण्डल्वक्ष सूत्रिणः ।

जटिला श्मश्रुलाः शान्ता आसीन ध्यान तत्परा ।।

चिन्तामणिव्रत खण्ड पृ. 109

ऐसे पवित्र उदासीन भेष में साधु-संत दो प्रकार के भेद वाले आदिकाल से चले आते हैं जिसकी पुष्टि कुर्मपुराण के निम्नांकित श्लोकों से होती है- "उदासीनः साधकश्च गृहस्थो द्विविधो भवेत् ।

कुटुम्बभरणे यत्तः साध्कोऽसौ गृही भवेत ॥

ऋणानि त्रीण्यपाकृत्य त्यक्त्त्वा भार्याधनादिकम् ॥

एकाकि यस्तु विचरेदुदासीनः स मौक्षिकः ।।

कूर्मपुराण पू०वि० अ०१ श्लोक 76,77

साधक उदासी संत/ गुरुबाबा कहलाते हैं। ये गृहस्थ उदासीन अपनी विवाहिता स्त्री से संतान उत्पन्न. कर अपने सम्प्रदाय मर्यादानुसार अपने स्थान में रहते हुए खेती व्यापार नौकरी इत्यादि करते हुए अपने कुटुम्ब परिवार का भरण पोषण करते हैं। ये अपने संतान का षोडशसंस्कार वेद विधि से करते हैं। ये पंचदेव उपासक हैं। सभी वर्णों के लोग इनकी पूजा प्रतिष्ठा करते हैं। धर्माचार्यों में इनकी गिनती आगे से होती चली आयी है।

द्वापर युग में स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने दुर्वासा से उदासीन धर्म की दीक्षा ली और उन्हें अपना धर्म गुरु बनाया। इन्होंने गुरु को साक्षात् भगवान् मानते हुए कहा कि गुर ब्रह्मा है गुरु विष्णु हैं गुरु भगवान महेश्वर हैं और गुरु साक्षात् परम ब्रह्म हैं। इसका प्रमाण गर्ग संहित माधुर्य खण्ड अध्याय-1 के श्लोक 13 से 15 में मिलता है—

" गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवेनमः || 13 ||

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।

चक्षुरुन्मीलित येन तस्मै श्री गुरवेनमः ।। 14।।

स्व गुरु मां विजानीयान्नावमन्येत कर्हिचेत ।

न मर्त्यबुद्धया सेवते सर्वदेव मयो गुरुः ।।15।।

त्रेतायुग में उदासीन सम्प्रदाय अपने उन्नति के उच्च शिखर पर था। इसका वर्णन राम चरित मानस में कई प्रसंगों पर आया है। शिव-पार्वती विवाह के प्रसंग में हिमाचल की पत्नी माता मैना (पार्वती की मां) के मुख से नारद मुनि को 'उदासीन "कहलाया है-

"नारद कर मैं काह विगारा। भवनमोर जिन्ह बसत उजारा। साचेहुँ उन्ह के मोहनमाया । उदासीन धनु धामु न जाया।। रामचरित मानस बाल काण्ड दोहा 96 के आगे चौपाई 1/2

पिता के आज्ञा पालन का व्रत निवाहने वाले श्री राम उदासीन भेष धारण कर चौदह वर्ष के वनवास के लिए निकल पड़े–

"तापस भेष विशेष उदासी। चौदह वरिस राम बनवासी - 'रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड दो० २४ चौपाई-२

"यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी । बटु तापस मुनिसिद्धउदासी)- वही अयोध्याकाण्ड दोहा 107 चौपाई- 3

"सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं। उदासीन तापस बन रह हीं। वही अयोध्या काण्ड दोहा 209/2

स्पष्ट है कि उदासीन की प्रतिष्ठा बटु, तापस मुनि तथा सिद्ध पुरुषों से उपर थी।

द्वापर युगमें भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को उदासीन महात्माओं की महत्ता बताते हुए कहते हैं कि

" नच मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय ।

उदासीन बदासीनम सक्तंह तेषु कर्मसु।"

गीता अध्याय ५१ १ श्लोक १ उदासीन संत की चचर्चा करते हुए भगवान श्री कृष्ण

आगे कहते हैं कि जिसे किसी बात की इच्छा न हो, जो पवित्र हो, जिसने सभी कर्तव्य त्याग दिये हों यानी जो चतुर्थाश्रमी हो, जिसे दुःख पीड़ा नहीं पहुंचाता, मेरे स्वरूप में निपुण तथा मेरी भक्ति करता हो ऐसा भक्त मुझे प्रिय हैं–

"अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथुः ।

सर्वारम्मपरित्यागी भक्तिमान् यः समे प्रियः ।।

गीता अध्याय-12 श्लोक 16 धर्मराज (यम) से नारद जी धर्म सम्बन्धी प्रश्न करते हैं कि निन्दनीय माने जाने वाले 'नरक में कौन नहीं जाता है।

'के न गच्छन्ति नरकं पापिष्ठं लोकगर्हणम ।

सर्वमाख्याहि तत्त्वेन परं कैतूहलं हि मे ।।

इस प्रश्न के उत्तर में धर्मराज कहते हैं कि - ज्ञानी ब्राह्मण, पूर्ण विद्वान मनुष्य, स्वामी के लिए प्राण त्यागने वाला सेवक और उदासीन महात्मा नरक के भागी नहीं होते।

ज्ञानवन्तो द्विजा ये च ये च विद्या पराङ्गताः ।

उदासीना न गच्छन्ति स्वाम्यर्थे च हतानराः ।।

वाराहपुराण 207/24,26

उदासीन महात्मा की महत्ता का वर्णन बृहन्नारदीय-पुराण में की गई है। बटवृक्ष पर रहने वाले ब्रह्मराक्षस ने महाराज सुदास से कहा कि राजन! मैंने उदासीन मुनि गौतम को अपना गुरु बनाया था। प्रमाद वश उनकी आज्ञा को नहीं माना, जिससे मुझे यह गति प्राप्त हुई ।

प्रमत्तोडहं महाभाग विद्यया वयसा धनैः ।

उदासीन गुरुं कृत्वा (त्दवज्ञया। प्राप्तवानीहशीं गतिम् ।।

बृहन्नारदीय पुराण 9/83

ब्रह्मा के मानस पुत्र - सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार स्वभावतः विरक्त प्रवृत्ति के थे। ब्रह्मा की प्रार्थना पर स्वयं नारायण हंसावतार होकर इन कुमारों को उदासीन धर्म की शिक्षा दी। इसलिए हंसावतार नारायण उदासीन सम्प्रदाय के प्रथम उपदेष्टा माने जाते हैं और ये चारे कुमार उदासी सम्प्रदाय के प्रथम आचार्य हैं। इन कुमारों ने देवर्षि नारद को उदासीन दीक्षा दी और तभी से चतुर्थाश्रम की परम्परा चल पड़ी और गुरु-शिष्य की परम्परा कायम हुई। इसी गुरुशिष्य के क्रम में 163 गुरु वेद मुनि उदासीन हुए। इनके मुख्य दो शिष्य हुए एक निर्वाण सन्तरेणमुनिजी जो श्री गुरुनानक देव जी के गुरु थे और दूसरे श्रीअविनाशी मुनि जी जो जगत्गुरु उदासीनाचार्य श्रीचन्द्र महाराज जी के गुरु देव थे। अविनाशी मुनि का जन्म सोलहवीं सदी में एक विद्वान ब्राह्मण के घर हुआ। इनका स्थान परम्परा के अनुसार 164 वाँ पड़ता है। उदासीन सम्प्रदायाचार्य श्रीचन्द्र जी महाराज ने विक्रम संवत 1538 में इनसे उदासीन सम्प्रदाय की दीक्षा ली।

उदासीन आचार्यों की एक लंबी गुरु-शिष्य परम्परा है जिसमें प्रारंभ से अबतक 165 आचार्य हुए हैं जिनका वर्णन इस प्रकार है–

" ब्रह्मात्मजो बुधवरः प्रथितो महात्मा,

स्तुत्यः सदामुनिवरः स सनत्कुमारः ॥

वीणाविभूषित करः सुग्रेय कीर्तिः,

नः पातु नारदमुनिर्भवताप हारी ।।1।।

अविनाशीर्मुनि र्दान्तस्तपसा दग्धकल्मषः । प्रज्ञाताखिलविद्यानां भव भाराप हारकः।।4।।

श्रीचन्द्र देवो मुनिराज मान्यः

श्रेयः प्रदानात् प्रथितो वदान्यः । दिग्वृन्दविस्तारियशोवितानाद् भूचक्रवालं विशदं वितेने।।42।।

योगेश्वर गुरु गंगेश्वर प्रथम संस्करण पेज-6

इसी तरह का उल्लेख उदासियां दा सच्चा इतिहास पृष्ट 286-287 पर अंकित है। यह पुस्तक गुरुमुखी लिपि में लिखी हुई है।

जगद्गुरु उदासीनाचार्य श्रीचन्द्र महाराज को शंकर का स्वरूप माना जाता है। इन्होंने आदि उदासी धर्म को जागृत किये और देश-विदेश जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किए।

श्री हरि (विष्णु) के 24 अवतारों में एक अवतार 'हंसावतार' माना गया है। अपने हंस अवतार में श्री विष्णु जटाधारी, वल्कल वस्त्र पहने, कृष्ण मृग चर्म, यज्ञोपवीत, माला, दण्ड, कमण्डलधारी तपस्वी रूप में हैं। इन्होंने ही सनत्कुमार को ब्रह्मविद्या का उपदेश दिए। मुनि परशुराम सूत्र में विष्णु को 'उदासीन' लिखा है-

"विष्णुरुदासीनः ।" ।।6।। उदासियों का गोत्र "अच्युत" है। अशोक मानक विशाल हिन्दी शब्द कोष संस्करण - 2010 के पृष्ट संख्या-21 पर अच्युत का अर्थ है- अपने स्थान से न हटने या गिरने वाला; जो अपने स्थान से न हटे (पु.) - विष्णुः कृष्णः।

श्री विष्णु पुराण में भगवान विष्णु

अच्युत' कहकर कई श्लोकों में सम्बोधित किया गया है। यथा–

1. " सर्वेश सर्वभूतात्मन्सर्व सर्वाश्रयाच्युत ।

प्रसीद विष्णो भक्तानां ब्रज नो दृष्टि गोचरम् ।।57।।

2. यन्नायं भगवान् ब्रह्मा जानाति परमं पदम् ।

तन्नता स्मं जगद्वाम तव सर्वगताच्युत ।।59।।

श्रीविष्णु पुराण अध्याय 9 श्लोक 57/59 प्रथम अंश

3.यस्मिन्नाराधिते सर्ग चकारादौ प्रजापतिः ।

तमाराध्याच्युतं वृद्धिः प्रजानां वो भविष्यति।।17।। अध्याय प्रथम अंश

4.अनादि मध्यान्तमंजम वृद्धिक्षयमच्युतम्।

प्रणतोऽस्म्यन्त सन्तानं सर्व कारण कारणम् ॥ अ० 17।। प्रथम अंश श्लोक–15

5.न मंत्रादिकृतं तात न च नैसर्गिको मम ।

प्रभाव एव सामान्यो यस्य यस्याच्युतो हृदि॥ अ.19 श्लो॰ 4 प्र०अंश

6.एवं ज्ञाते स भगवाननादिः परमेश्वरः ।

प्रसीदत्यच्युतस्तस्मिन् प्रसन्ने क्लेशसङ्ख्यः ।॥ श्लोक-49।।

श्री दुर्गासप्तसती अध्याय 1 (एक) श्लोक 86/87 पर श्रीनारायण को अच्युत' कहकर प्रार्थना की गई हैं-

'मोहयैतो दुराधर्षा वसुरौ मधु कैटभौ। प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ।।86 ।।

बोधश्चक्रियागमस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।।87।।

ऊपर वर्णित शब्दकोष के पृष्ट संख्या 90-91 में उदासी शब्द का अर्थ इस प्रकार लिखा है- 'उदासी (पु.) (संस्कृत ऊदास) विरक्त या त्यागी पुरुष: सनातन धर्मी साधुओं का एक समुदाय जो गुरुनानक के पुत्र महात्मा श्रीचन्द्र का अनुयायी है।

उदासियों का मुख्यतः दो वर्ग है–(1) साधक उदासी और (2) नैष्ठिक (ब्रह्मतत्पर) उदासी। साधक उदासी। साधक उदासी संत कहे जाते हैं। इन्हें गृहस्थ उदासीन भी कहा जाता है।। अपनी विवाहिता स्त्री से सन्तान उत्पन्न कर संप्रदाय मर्यादानुसार वैदिक रीति से षोडश संस्कार करते हैं। इनके निवास स्थान को संग, मठिया, कुटिया,आश्रम इत्यादि नामों से ऊना जाता है। इनका कार्य पठन-पाठन, यज्ञ करना, यज्ञ करवाना तथा सद गृहस्थों को गुरुमुख करना है। ये लोग गुरु बाबा के नाम से सम्मज में प्रतिष्ठित हैं। धर्माचार्यों के वीच इनकी गिनती पुरातन काल से चली आ रही है। ये लोग तंत्र मंत्र के विद्या में भी निपुण होते हैं।

उदासीनाचार्य श्री श्रीचन्द्र महाराज जी के अनुयायी विन्ध्याचल के उत्तरी भाग, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, उड़ीसा, बंगाल एवं भारत वर्ष के विभिन्न प्रान्तों में फैले हुए हैं। विन्ध्याचल के उत्तर में बसे होने की वजह से मूलतः पंच गौड़ ब्राह्मण की श्रेणी में आते हैं। इन सबों का गोत्र 'अच्युत' है, जिसका संकल्प समस्त धार्मिक अनुष्ठानों/अवसरों पर लेते हैं। इनके गोत्रावली का विशेष विवरण निम्नांकित है: -

गोत्र–अच्युत
वेद–सामवेद
शाखा–माध्यनिद्नी
सूत्र–कात्यायन
प्रवर–सनत कुमार,नारद,जमदिग्न, प्रशुराम अविनाशी मुनि
शिखा –दक्षिण
पाद –दक्षिण
देवता–विष्णु

<u>सौजन्य</u>

श्री नानक शरण दास जी

पटना